Tender Heart High School, Sector-33 B, Chandigarh

कक्षा - दसवीं
विषय - हिन्दी साहित्य शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा

पुस्तक : एकांकी संचय

पाठ- 5 'महाभारत की एक साँझ' लेखक- भारत भूषण अग्रवाल

निम्नलिखित अवतरण पर आधारित प्रश्नोत्तर लिखो:-

(vii) "पश्चाताप तो तुम्हें होना चाहिए। मैं क्यों पश्चाताप करूँगा? मैंने ऐसा कौन-सा पाप किया है? मैंने अपने मन के भावों को गुप्त नहीं रखा, मैंने षड़यन्त्र नहीं किया, मैंने गुरुजनों का वध नहीं किया।" (पृष्ठ संख्या-75)

(क) आपकी दृष्टि में पश्चाताप किसे होना चाहिए था? वक्ता को या श्रोता को? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर -[निर्देश : प्रस्तुत प्रश्न व्यक्तिनिष्ठ है। अतः छात्र अपने विचार स्वयं व्यक्त करेंगे।]

प्रस्तुत अवतरण में वक्ता दुर्योधन है और श्रोता युधिष्ठिर है।

(ख) वक्ता ने अपने पक्ष में कौन-कौन से तर्क रखे?

उत्तर- प्रस्तुत अवतरण का वक्ता दुर्योधन है और श्रोता युधिष्ठिर है।

वक्ता ने अपने पक्ष में रखते हुए सारा दोष श्रोता के सिर मढ़ते हुए कहा कि मैं पश्चाताप क्यों करूँ? मैंने कौन-सा पाप किया है? मैंने अपने मन के भावों को गुप्त नहीं रखा, मैंने षड़यन्त्र नहीं किया, मैंने गुरुजनों का वध नहीं किया।

(ग) श्रोता के अनुसार वह वक्ता के पास किस उद्देश्य से आया था?

उत्तर- इस गद्यांश का श्रोता युधिष्ठिर है और वह वक्ता दुर्योधन के पास महाभारत के युद्ध के अंत में संध्या समय अकेले ही दुर्योधन के पास आया था। दुर्योधन के अंतिम समय में युधिष्ठिर ने कहा था कि मैं इस

समय तुम्हारी अंत समय में तुम्हें शांति देने आया हूँ, मैंने सोचा हो सकता है तुम्हें पश्चाताप हो रहा है। अतः मैं तुम्हारे प्रति संवेदना प्रकट करने तथा दुःख कम करने आया हूँ।

(घ) एकांकीकार ने एकांकी में किस पौराणिक घटना को नए संदर्भ में किस प्रकार प्रस्तुत किया है?

उत्तर- प्रस्तुत एकांकी 'महाभारत की एक साँझ' में लेखक भारत भूषण अग्रवाल ने एक पौराणिक विषय-वस्तु को सर्वथा नए ढंग से प्रस्तुत किया है। एकांकी में दिखाया गया है कि महाभारत के युद्ध के लिए दुर्योधन का हठ ही ज़िम्मेदार नहीं था बल्कि पांडवों की महत्त्वाकांक्षा भी समान रूप से उत्तरदायी थी।

(viii) "मैं तुम्हारी आत्मप्रशंसा नहीं सुन सकता, इसे तुम अपने भक्तों के लिए ही रहने दो। तुम विजय की डींग मार सकते हो, पर न्याय धर्म की दुहाई मत दो।" (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ सं०-76)

(क) युधिष्ठिर ने अपनी प्रशंसा में क्या-क्या कहा था?

उत्तर- युधिष्ठिर ने अपनी प्रशंसा में दुर्योधन से कहा कि सुयोधन तुम मेरे न्याय की बात करते हो तो सुनो, मैं कभी न्याय के लिए बड़े-बड़े दुःख उठाने से नहीं चूका हूँ, न्याय की बात लेकर हुए महाभारत के युद्ध में सगे-संबंधियों के तड़प-तड़प कर प्राण त्यागने का यह भीषण दृश्य भी मैं देख रहा हूँ। इस युद्ध के परिणाम के रूप में अबलाओं, अनाथों का करुण चीत्कार किसी भी हृदय को दहलाने के लिए पर्याप्त है। पर सुयोधन! मैं संहार के इन दृश्यों को भी शांत भाव से सह गया क्योंकि न्याय के पथ पर जो भी मिले सब स्वीकार है।

(ख) दुर्योधन के अनुसार राज्य पर युधिष्ठिर का अधिकार क्यों नहीं था?

उत्तर- दुर्योधन के अनुसार जिस राज्य पर युधिष्ठिर अपना अधिकार चाहता था, वह उसके पिता का कभी था ही नहीं। दुर्योधन युधिष्ठिर को बताता है कि तुम क्यों भूल रहे हो कि वह राज्य तुम्हारे पिता पाण्डु के पास आया कैसे?

जन्म के अधिकार से तो बिलकुल भी नहीं क्योंकि तुम्हारे पिता ज्येष्ठ पुत्र नहीं थे, ज्येष्ठ पुत्र मेरे पिता थे। तुम्हारे पिता को राज्य की देखभाल का कार्य केवल इसलिए मिला था क्योंकि मेरे पिता को नेत्रहीनता के कारण राज्य संचालन करने में असुविधा होती। अन्यथा उस राज्य पर न तुम्हारे पिता का और न तुम्हारा अधिकार था।

(ग) युधिष्ठिर ने दुर्योधन की इस बात का किस प्रकार उत्तर दिया?

उत्तर- युधिष्ठिर ने दुर्योधन की उपर्युक्त बात का उत्तर देते हुए कहा कि तुम्हारा कहना ठीक है, परन्तु एक बार चाहे किसी भी कारण से जब राज्य मेरे पिता को मिल गया तब उनके पश्चात उस पर मेरा ही अधिकार हुआ या नहीं? राज्य का नियम तो यही कहता है कि राजा के बाद उसका ज्येष्ठ पुत्र ही राज्य का अधिकारी होता है। फिर महाराज पाण्डु का राज्य मेरा हुआ या नहीं?

(घ) "सबने मेरा हठ देखा, मेरे पथ का न्याय किसी ने न देखा"- दुर्योधन ने इसका क्या कारण बताया?

उत्तर- 'सबने मेरा हठ देखा, मेरे पथ का न्याय किसी ने न देखा'- दुर्योधन ने अपने इस कथन का कारण बताते हुए कहा कि सबने यही समझा कि वह हठधर्मी है। वह (दुर्योधन) अपने नेत्रहीन पिता को ही राज्य का अधिकारी मानता था जिन्होंने अपनी नेत्रहीनता के कारण पाण्डु को राज्य का अधिकार दे दिया था लेकिन युधिष्ठिर उनके बाद स्वयं को राज्य का अधिकारी समझने लगा था, जो दुर्योधन को अमान्य था। दुर्योधन का कहना था कि पाण्डु के बाद राज्य का अधिकार दुबारा उसके पिता के पास ही आना था और तब वे निर्णय करते कि राज्य किसे सौंपा जाए? दुर्योधन की इस बात को सबने उसका हठ कहा, मगर इस बात के पीछे छुपे न्याय के पक्ष को किसी ने नहीं देखा।

Tender Heart High School, Sector-33 B, Ghandigarh.

कक्षा - दसवीं | दिनांक - 25 दिसम्बर, 2023
विषय - हिन्दी साहित्य | शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा

पुस्तक : एकांकी संचय

पाठ-5 'महाभारत की एक साँझ' लेखक- भारत भूषण अग्रवाल

निम्नलिखित अवतरण पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखो :-
"सत्य को ढँकने का प्रयत्न न करो युधिष्ठिर! उसे निष्पक्ष होकर जाँचो। मेरे पास प्रमाणों की कमी नहीं है।"

(क) दुर्योधन ने पुरोचन और द्रुपद के संबंध में किस तथ्य को प्रकट किया?

उत्तर- दुर्योधन ने पुरोचन और द्रुपद के संबंध में इस तथ्य को प्रकट किया कि पांडवों ने पुरोचन को कपट (छलपूर्वक) से मार डाला और पंचाल जाकर द्रुपद (द्रौपदी के पिता) को अपनी ओर मिला लिया। तुम इस तरह अपनी शक्ति बढ़ाने लगे। तुम्हें इस तरह शक्ति बढ़ाते देखकर मेरे पिता ने आधा राज्य दे दिया।

(ख) अपने पिता जी द्वारा युधिष्ठिर को आधा राज्य दे दिए जाने का क्या कारण बताया?

उत्तर- दुर्योधन युधिष्ठिर की राज्य पाने की महत्त्वाकांक्षा के बारे में पिछली बातें याद करते हुए युधिष्ठिर से कहता है कि तुमने पंचाल जाकर राजा द्रुपद को अपनी ओर मिलाया। तब तुम्हारा बढ़ता हुआ बल देखकर दुर्योधन के पिता ने युधिष्ठिर को आधा राज्य दे दिया। आधा राज्य देने का मुख्य कारण यह था कि युधिष्ठिर अन्य राजाओं के साथ मिलकर अपनी शक्ति बढ़ाकर उनके (धृतराष्ट्र) राज्य पर आक्रमण न कर सके। राज्य मिल जाने पर युधिष्ठिर शांति से चुप बैठ जाएगा।

(ग) "आधा राज्य पाकर भी तुमने चैन न लिया" — इस संबंध में दुर्योधन ने युधिष्ठिर पर क्या आरोप लगाए?

उत्तर- 'आधा राज्य लेकर भी तुमने चैन न लिया" — कहकर

दुर्योधन ने युधिष्ठिर पर इस संबंध में अनेक आरोप लगाए कि तुमने अर्जुन को चारों ओर दिग्विजय के लिए भेजा। राजसूय यज्ञ के बहाने तुमने जरासंध और शिशुपाल को समाप्त कर दिया। यहाँ तक कि जुए में खेल-खेल में भी तुम अपनी ईर्ष्या न भूले और तुमने झट से अपना आधा राज्य दाँव पर लगा दिया कि यदि तुम जीते तो तुम्हें मेरा राज्य भी अनायास ही मिल जाए। बनवास उसी महत्त्वाकांक्षा का परिणाम था, मेरा उसमें कोई हाथ नहीं था।

(घ) "यहाँ तक कि जुए में खेल-खेल में भी तुम ईर्ष्या न भूले" - दुर्योधन ने अपनी बात स्पष्ट करने के लिए क्या कहा?

उत्तर- "यहाँ तक कि जुए में खेल-खेल में भी तुम अपनी ईर्ष्या न भूले" - दुर्योधन ने अपनी इस बात को स्पष्ट करने के लिए युधिष्ठिर से कहा कि खेल के समय भी तुम मेरे प्रति अपनी ईर्ष्या नहीं भूले और तुमने झट से अपना राज्य दाँव पर लगा दिया, तुम यह सोच रहे थे कि अगर तुम जीत गए तो तुम्हें मेरा राज्य बिना किसी प्रयास के मिल जाएगा। अपनी महत्त्वाकांक्षा को तुम दबा न पाए थे। यह तुम्हारी ईर्ष्या का ही प्रमाण था। बनवास उसी महत्त्वाकांक्षा का परिणाम था।

[अंतिम पृष्ठ]